

rielle Gestalt, Körper, Form, Erscheinungsform; = काठिन्य AK. 3, 4, 14, 69. H. an. 2, 187. MED. I. 43. = काप, तनु AK. 2, 6, 2, 22. 3, 4, 14, 69. H. 363. H. an. MED. HALĀJ. 2, 355. Gegens. द्रव *Flüssigkeit* P. 6, 1, 24. SUÇR. 1, 313, 7 (Berl. Hdschr. मूर्ति). घनो मूर्तिगुणो AK. 3, 4, 18, 113. TBa. 3, 12, 9, 2. PRAÇNOP. 1, 5. AIT. UP. 3, 2. NIR. 14, 5. व्यक्तिगुणाविशेषाश्रयो मूर्तिः Got. 2, 2, 69. नहि मे तप्यमानस्य तपं यास्यति मूर्तयः (= शरीरावयवाः Schol.) die festen Bestandtheile des Körpers R. 1, 64, 20. M. 12, 120. असंख्या मूर्तयस्तस्य निष्पत्ति शरीरतः 13. सान्नादिव स्थितं मूर्त्या मन्मथं त्रयसंपदा MBu. 3, 2131. तेषां तु सप्तानां पुरुषाणां मूर्त्तानाम् । मूर्त्तानाम्यो मूर्त्तिमात्राभ्यः संभवत्यव्ययाद्ययम् ॥ M. 1, 19, 35. fg. मनोवाञ्छमूर्तिभिः 11, 231, 241. 12, 124. MBu. 3, 11274. RAGH. 3, 27. वल्मीकाकामिमम्^० adj. ÇĀK. 170. पूत^० adj. Spr. 4030. RĀGA-TAR. 3, 364. नम्र^० adj. mit gebeugtem Körper PAÑKĀR. 3, 9, 19. VARĀH. BRH. S. 34, 66. 64, 1. 103, 9. BRH. 27, 6. दिव्यशरीरास्ते न च विपर्ययमूर्तयः keinen materiellen Leib besitzend MBu. 3, 13461. स्रययुः कफरक्तमूर्तिः gebildet aus SUÇR. 1, 303, 19. भूर्मेगन्धं तथा प्राणं गौरवं मूर्तिमेव च । आत्मा गृह्णात्यज्ञः JĀG. 3, 78. रोप^० so v. a. der personificirte Zorn HARIV. 13471. मूर्ति स्त्रीरूपाम् eine weibliche Gestalt PAÑKĀR. 1, 14, 55. बाला जगत्त्रितयमोहनदिव्यमूर्तिः DHŪRTAS. in LA. 91, 16. वक्रैर्धया योनिगतस्य मूर्तिर्न दृश्यते ÇVETĀÇV. UP. 1, 13. अल्प^० (दीप) VARĀH. BRH. S. 84, 1. 2. उडुयो ऽङ्गि दृश्यमूर्तिः BRH. 13, 8. यन्नदरः सामशिरा असावृश्चर्तिः (ब्रह्मा) KAUSH. UP. 1, 7. SŪRJAS. 12, 17. स्नेतो^० MBH. 46. इन्द्रमूर्तिर्द्वितीयेव (statt des einfachen इन्द्र, weil von einem Weibe die Rede ist) KATHĀS. 37, 182. चान्द्री 39, 6. ऐन्दवी 28, 102. मूर्त्यन्तरपरिग्रह = भूमिका TRIK. 3, 3, 36. प्रसन्न^० so v. a. Aussehen VARĀH. BRH. S. 38, 44. fg. तरुणा^० BRH. 2, 9. चन्दनतरुर्महनीयमूर्तिः Spr. 3310. उत्पत्तिरेव विप्रस्य मूर्तिर्धर्मस्य शाश्वती *Erscheinungsform, Manifestation* M. 1, 98. आचर्या ब्रह्मणो मूर्तिः पिता मूर्तिः प्रजापतेः । माता पृथिव्या मूर्तिस्तु धाता स्वो मूर्तिरात्मनः ॥ 2, 225. Spr. 3683. दारिद्र्यस्य परा मूर्तिस्तज्ञानं न इविणात्पता 1143. समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे SŪRJAS. 1, 1. वासुदेवः परं ब्रह्म तन्मूर्तिः पुरुषः परः 12, 12. अथ सृष्टौ मनश्चक्रे ब्रह्माहंकारमूर्तिभूत् 22. Spr. 1152. अदृश्यरूपाः कालस्य मूर्तयो भगणाश्रिताः SŪRJAS. 2, 1. चतुर्मूर्ति^० adj. Beiw. Brahman's MBu. 3, 13560. Skanda's 9, 2486. Vishṇu's RAGH. 10, 74. BHĀG. P. 5, 17, 16. मूर्ति *Gestalt* so v. a. *schöne Gestalt* : मूर्तेर्लाघवमेवैतत् — निर्धनत्वं शरीरिणाम् Spr. 2229. — b) *Bild* H. an. कात्यायनीमूर्तिसनार्थं देवतागृहम् Vid. 90. अच्युतमूर्तिसेवन DHŪRTAS. in LA. 76, 5. दर्श — मूर्ति मधुह्रियः कुम्भे LA. (II) 92, 5. — c) *Bez. des 1ten astrologischen Hauses*, = तनु, अङ्ग VARĀH. BRH. S. 103, 1. BRH. 11, 8. 17. — d) N. pr. einer Tochter Daksha's und Gattin Dharma's BHĀG. P. 4, 1, 49. मूर्तिः सर्वगुणोत्पत्तिर्नरनारायणावृषो (अमृत) 52. — 2) m. N. pr. eines Weisen unter dem 10ten Manu BHĀG. P. 8, 13, 22. — Vgl. अष्ट^०, अयो^०, तपो^०, तेजो^०, त्रि^०, प्रचाड^०, प्रति^०, बङ्ग^०, मल्ल^० (als Beiw. Çiva's auch MBu. 1, 1154. Vishṇu's BHĀG. P. 4, 8, 58), मरु^०, करदग्ध^०.

मूर्तिव (von मूर्ति) n. das ein-Körper-Sein: मूर्तिवै परिकल्पितः zu einem Körper gemacht, — erhoben VARĀH. BRH. 1, 1. अल्प^० nom abstr. von अल्पमूर्ति SŪRJAS. 2, 10. चतुर्मूर्तिव von चतुर्मूर्ति MBu. 13, 6393.

मूर्तिधर (मू^० + धर) adj. einen Körper habend, körperhaft, leibhaftig: दर्श सा । गुह्येन समाश्रासमिव मूर्तिधरं बहिः (vgl. बहिम् am Ende)

KATHĀS. 13, 181. वेदाः BHĀG. P. 1, 19, 23.

मूर्तिप (मू^० + 2. प) m. ein das Bildniss des Gottes hütender Priester Verz. d. Oxf. H. 43, a, N. 1.

मूर्तिभाव (मू^० + भाव) m. das Annehmen einer festen Form DHĀRTUP. 28, 15.

मूर्तिमत् (von मूर्ति) 1) adj. eine feste Form —, körperliche Gestalt habend, leibhaftig AK. 3, 2, 26. H. 1449. अद्रवन्मूर्तिमत्स्वाङ्गम् Kār. zu P. 4, 1, 54. कन्दर्प इव त्रयेण मूर्तिमानभवत्स्वयम् MBH. 3, 2086. सर्वमङ्गला

HIT. 100, 2. मुचु KATHĀS. 9, 62. SUÇR. 1, 113, 21. 2, 161, 10. ÇĀK. 112. UTTARARĀMAK. 9, 4. PAÑKĀR. 1, 6, 32. उपतस्थुर्महास्त्राणि मूर्तिमत्ति नृपा-

त्मजम् R. 1, 29, 23. हृदयं स्वयमायात वैदेह्या इव मूर्तिमत् RAGH. 12, 64.

ख^० Luft zum Körper habend, aus Luft gebildet M. 2, 82. विश्व^० alle

Formen annehmend, Bein. Vishṇu's MBH. 3, 15808. — 2) m. N. pr.

eines Sohnes des Kuça HARIV. 1423. Vgl. मूर्त्यय. — 3) n. (nach ÇKDr.

und Wilson) Körper H. 363.

मूर्तिमय (wie eben) adj. eine bestimmte Form habend: जगदपडमिदं पू-

र्वमासीत्सर्वं क्षिप्रामयम् । प्रजापतेर्मूर्तिमयम् in Praçāpati's Form ge-

kleidet HARIV. 12327.

मूर्तिलिङ्ग (मू^० + लिङ्ग) n. wohl = प्राग्ज्योतिष N. pr. der Stadt Na-

raka's: स (नरकः) बभौ ऽस्यः HARIV. 6792. दृश्यज्ञापकं सत्त्वं मूर्तिलिङ्गं

तत्स्थः । प्राग्ज्योतिषपुरस्थो वा NILAK.

मूर्ध = मूर्धन् am Ende einiger adj. comp.: मृणिभूषितमूर्धाय MBH. 13,

895. विचित्रमणिमूर्धाय 896. — Vgl. त्रि^० und द्वि^०.

मूर्धक (von मूर्धन्) m. ein Kshatrija ÇABDAR. im ÇKDr.

मूर्धकणी f. Regenhut, Regenschirm ÇKDr. angeblich nach Hār. —

Vgl. das folgende Wort.

मूर्धकर्परी (मूर्धन् + कर्परी = कर्पर) f. dass. Hār. 40.

मूर्धखोल (मूर्धन् + खोल) n. dass. TRIK. 2, 10, 13.

मूर्धज (मूर्धन् + 1. ङ) m. 1) pl. Haupthaar HALĀJ. 2, 375. ĠĀṬĀDH. im

ÇKDr. MRĀKĪ. 122, 33. ÇĀK. 29. Spr. 733. VARĀH. BRH. S. 68, 82. 70, 9.

० रागसेवा 77, 1. am Ende eines adj. comp. (f. स्त्री) 69, 38. 104, 33. BRH.

2, 10. 17, 3. MBH. 1, 2792. R. 1, 43, 41. 38, 10. R. GORR. 1, 47, 16. 22. 2,

66, 25 (wo प्रकीर्णाञ्चित^० gelockt zu lesen ist). 6, 37, 61. SUÇR. 2, 390, 3.

KUMĀRAS. 4, 4. KATHĀS. 21, 29. Vgl. मुक्त^०. — 2) N. pr. eines Fürsten

(Kakravartin) VJUTP. 92. SCHIEFNER, Lebensb. 232 (2). Vie de HIOUEN-

THSANG 280.

मूर्धज्योतिष् (मूर्धन् + ज्यो^०) n. = ब्रह्मरन्ध्र Verz. d. Oxf. H. 230, b, 45.

मूर्धटक m. N. pr. einer Tantra-Gottheit VJUTP. 103.

मूर्धतम् (von मूर्धन्) adv. auf dem Kopfe AV. 10, 6, 31. fg.

मूर्धतैलिक (मूर्धन् + तै^०, adj. von तैल) adj. in Verb. mit वस्ति Bez.

einer Gattung von Errhina SUÇR. 2, 332, 3.

मूर्धन् (मूर्धन् UNĀDIS. 1, 158) m. Stirn, Vorderkopf, Schädel; Kopf überh.

(AK. 2, 6, 2, 46. H. 366. HALĀJ. 2, 363); in ältester Zeit selten eigent-

lich, häufig in übertragener Bed.: der vorderste, höchste, vorragendste

Theil; Oberfläche, Höhe; concret der Vorderste, Erste NIR. 9, 31. यो मू-

र्धानं ततपते त्रयाया wer sich um deinetwillen die Stirn heiss werden lässt

RV. 4, 2, 6. 1, 164, 28. अर्बुदस्य 10, 67, 12. 1, 54, 5. बृहस्पतेः TS. 1, 1, 2,

2. मूर्धा ह्यास्य विपतेत् sein Schädel zerspringt (wonach unter 1. पत्

mit वि die zweite Bed., und eben so unter dem caus. zu verbessern ist)